सीबीएसई कक्षा -12 हिंदी कोर

महत्वपूर्ण प्रश्न

पाठ – 11

महादेवी वर्मा (भक्तिन)

<u>महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर</u>

1. 'भक्तिन' पाठ के आधार पर भक्तिन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'भक्तिन' के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

पाठ के आधार पर भक्तिन की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- 'भक्तिन' लेखिका की सेविका है। लेखिका ने उसके जीवन-संघर्ष का वर्णन किया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

(क) व्यक्तित्व-भक्तिन अधेड़ उम्र की महिला है। उसका कद छोटा व शरीर दुबला-पतला है। उसके होंठ पतले हैं तथा आँखें छोटी हैं।

(ख) परिश्रमी-भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं आदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

(ग) स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वारा अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

(घ) महान सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिका ने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा अदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

2. भक्तिन की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- भक्तिन झूँसी गाँव के एक गोपालक की इकलौती सन्तान थी। इसकी माता का देहांत हो गया था। फलतः भक्तिन की देखभाल विमाता ने किया। पिता का उस पर अगाध स्नेह था। पाँच वर्ष की आयु में ही उसका विवाह हँडिया गाँव के एक ग्वाले की सबसे छोटे

पुत्र के साथ कर दिया गया। नौ वर्ष की आयु में उसका गौना हो गया। विमाता उससे ईर्ष्या रखती थी। उसने पिता की बीमारी का समाचार तक नहीं भेजा।

3. भक्तिन के ससुरालवालों का व्यवहार कैसा था?

उत्तर- भक्तिन के ससुरालवालों का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। घर की महिलाएँ चाहती थी कि भक्तिन का पति उसकी पिटाई करे। वे उस पर रौब जमाना चाहती थीं। इसके अतिरिक्त, भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया, जबकि उसके सास व जेठानियों ने लड़के पैदा किए थे। इस कारण उसे सदैव प्रताड़ित किया जाता था। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने भक्तिन पर पुनर्विवाह के लिए दबाव डाला। उसकी विधवा लड़की के साथ जबरदस्ती की। अंत में, भक्तिन को गाँव छोड़ना पड़ा।

4. भक्तिन का जीवन सदैव दुखों से भरा रहा। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भक्तिन का जीवन प्रारंभ से ही दुखमय रहा। बचपन में ही माँ गुजर गई। विमाता से हमेशा भेदभावपूर्ण व्यवहार मिला। विवाह के बाद तीन लड़कियाँ उत्पन्न करने के कारण उसे सास व जेठानियों का दुर्व्यवहार सहना पड़ा। किसी तरह परिवार से अलग होकर समृद्धि पाई, परंतु भाग्य ने उसके पति को छीन लिया। ससुराल वालो ने उसकी संपत्ति छीननी चाहि, परंतु वह संघर्ष करती रही। उसने बेटियों का विवाह किया तथा बड़े जमाई को घर जमाई बनाया। शीघ्र ही उसका देहांत हो गया। इस तरह उसका जीवन शुरू से अंत तक दुखों से भरा रहा।

5. लछमिन के पैरों के पंख गाँव की सीमा में आते ही क्यों झड़ गए?

उत्तर- लछमिन की सास का व्यवहार सदैव कटु रहा। जब उसने लछमिन को मायके यह कहकर भेजा की तुम बहुत दिन से मायके नहीं गई हो, जाओ देखकर आ जाओ तो यह उसके लिए अप्रत्याशित था। उसके पैरों में पंख से लग गए थे। ख़ुशी-ख़ुशी जब वह मायके के गाँव की सीमा में पहुँची तो लोगों ने फुसफुसाना प्रारंभ कर दिया कि हाय! बेचारी लछमिन अब आई है। लोगों की नजरों से सहानुभूति झलक रही थी। उसे इस बात का अहसास नहीं था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है या वे गंभीर बीमार थे। विमाता ने उसके साथ अन्याय किया था। इसलिए वह हतप्रभ थी। उसकी तमाम ख़ुशी समाप्त हो गई।

6. लछमिन ससुरालवालों से अलग क्यों हुई? इसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर- लछमिन मेहनती थी। तीन लड़कियों को जन्म देने के कारण सास व जेठानियाँ उसे सदैव प्रताड़ित करती थीं। वह व उसके बच्चे घर, खेत व पशुओं का सारा काम करते थे, परंतु उन्हें खाने तक में भेदभावपूर्ण व्यवहार का समाना करना पड़ता था। लड़कियों को दोयम दर्जे का खाना मिलता था। उसकी दशा नौकरों जैसी थी। अतः उसने ससुरालवालों से अलग होकर रहने का फैसला किया।

अलग होते समय उसने अपने ज्ञान के कारण खेत, पशु, घर आदि में अच्छी चीजें ले ली। परिश्रम के बलबूते आर उसका घर समृद्ध हो गया।

7. भक्तिन व लेखिका के बीच कैसा संबंध था?

उत्तर- लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक-स्वामी का संबंध था, परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था। महादेवी उसकी कुछ आदतों से परेशानी थीं, जिसकी वजह से यदा-कदा उसे घर चले जाने को कह देती थी। इस आदेश को वह हँसकर टाल देती थी। दूसरे, वह नौकर कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी। वह लेखिका की छाया बनकर घुमती थी। वह आने-जाने वाले, अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब व आम की तरह पृथक अस्तित्व रखती तथा हर सुख-दुख में साथ रहती थी।

8. लेखिका के परिचित के साथ भक्तिन कैसा व्यवहार करत थी?

उत्तर- लेखिका के पास नेक साहित्यिक बंधु आते रहते थे, परंतु भक्तिन के मन में कोई विशेष सम्मान नहीं था। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती जैसा लेखिका करती थी। उसके सम्मान की भाषा, लेखिका के प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति लेखिका के सद्भाव से निश्चित होता है।

भक्तिन उन्हें आकार-प्रकार व वेशभूषा से स्मरण करती है और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा। कवि तथा कविता के संबंध में उसका ज्ञान बढ़ा है, पर आदरभाव नहीं।

9. भक्तिन के आने से लेखिका अपनी असुविधाएँ क्यों छिपाने लगीं?

उत्तर- भक्तिन के आने से लेखिका के खान-पान में बहुत परिवर्तन आ गए। उसे मीठा, घी आदि पसंद था। उसके स्वास्थ्य को लेकर उसके परिवार वाले भी चिंतित रहते थे। घरवालों ने उसके लिए अलग खाने की व्यवस्था कर दी थी। अब वह मीठे व घी से विरक्ति करने लगी थी। यदि लेखिका को कोई असुविधा भी होती थी तो वह उसे भक्तिन को नहीं बताती थी। भक्तिन ने उसे जीवन की सरलता का पाठ पढ़ा दिया।

10. लछमिन को शहर क्यों जाना पड़ा?

उत्तर- लछमिन के बड़े दामाद की मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर परिवारवालों ने जिठौत के साले को जबरदस्ती विधवा लड़की का पति बनवा दिया। पारिवार्क द्वेष बढ़ने से खेती-बाड़ी चौपट हो गई। स्थिति यहाँ तक आ गई कि लगान भी नहीं चुकाया गया। जब जमींदार ने लगान न पहुँचाने पर भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा तो उसके स्वाभिमानी हृदय को गहरा आघात लगा। यह उसकी कर्मठता के लिए सबसे बड़ा कलंक बन गया। इस अपमान के कारण वह दूसरे दिन कमाई के विचार से शहर आ गई।

11. कारागार के नाम से भक्तिन पर क्या प्रभाव पड़ता था? वह जेल जाने के लिए क्यों तैयार हो गई?

उत्तर- भक्तिन को कारागार से बहुत भय लगता था। वह उसे यमलोक के समान समझती थी। कारागार की ऊँची दीवारों को देखकर कर चकरा जाती थी। जब उसे पता चला कि महादेवी जेल जा रही हैं तो वह उनके साथ जेल जाने के लिए तैयार हो गई। वह महादेवी के बिना अलग रहने की कल्पना मात्र से परेशानी हो उठती थी।

12. महादेवी ने भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में बाँटा?

उत्तर- महादेवी ने भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों में बाँटा जो निम्नलिखित हैं-

प्रथम-विवाह से पूर्व
द्वितीय-ससुराल में सधवा के रूप में
तृतीया-विधवा के रूप में
चतुर्थ-महादेवी की सेवा में

13. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति क्यों थोपा गया? इस घटना के विरोध में दो तर्क दीजिए।

उत्तर- भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति इसलिए थोपा गया क्योंकि भक्तिन की विधवा बेटी के साथ उसके ताऊ के लड़के के साले ने जबरदस्ती करने की कोशिश की थी। लड़की ने उसकी खूब पिटाई की परंतु पंचायत ने कोई भी तर्क न सुनकर एकतरफा फैसला सूना दिया। इसके विरोध में दो तर्क-

(i) महिला के मानवाधिकार का हन होता है।

(ii) योग्य लड़की का विवाह अयोग्य लड़के के साथ हो जाता है।

14. 'भक्तिन' अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेवी जी के लिए अनमोल क्यों थी?

उत्तर- अनेक अवगुणों के होते हुए भी भक्तिन महादेवी वर्मा के लिए इसलिए अनमोल थी क्योंकि-

(i) भक्तिन में सेवाभाव कूट-कूट कर भरा था।

(ii) भक्तिन लेखिका के हर कष्ट को स्वयं झेल लेना चाहती थी।

(iii) वह लेखिका द्वारा पैसों की कमी का जिक्र करने पर अपने जीवनभर की कमाई उसे दे देना चाहती है।

(iv) भक्तिन की सेवा और भक्तिन में निःस्वार्थ भाव था। वह अनवरत और दिन-रात लेखिका की सेवा करना चाहती थी।

15. महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) परिश्रमी-परिश्रमी भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं अदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

(ii) स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वार अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

(iii) महान सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिकाने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया

की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

<u>पाठ आधारित अन्य प्रश्नोत्तर</u>

1. भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था? वह अपने नाम को क्यों छुपाना चाहती थी ?

उत्तर- भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था, हिन्दुओं के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी है। चूँकि भक्तिन गरीब थी। उसके वास्तविक नाम के अर्थ और उसके जीवन के यथार्थ में विरोधाभास है, निर्धन भक्तिन सबको अपना असली नाम लक्ष्मी बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती थी इसलिए वह अपना असली नाम छुपाती थी।

2. लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा ?

उत्तर- घुटा हुआ सिर, गले में कंठी माला और भक्तों की तरह सादगीपूर्ण वेशभूषा देखकर महादेवी वर्मा ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन रख दिया। यह नाम उसके व्यक्तित्व से पूर्णतः मेल खाता था।

3. भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभाजित किया गया है ?

उत्तर- भक्तिन के जीवन को चार भागों में बाँटा गया है-

- **पहला परिच्छेद**- भक्तिन का बचपन, माँ की मृत्यु विमाता के द्वारा भक्तिन का बाल-विवाह करा देना।
- **द्वितीय परिच्छेद**- भक्तिन का वैवाहिक जीवन, सास तथा जिठानियों का अन्यायपूर्ण व्यवहार, परिवार से अलगौझा कर लेना।
- **तृतीय परिच्छेद**- पति की मृत्यु विधवा के रूप में संघर्षशील जीवन।
- **चतुर्थ परिच्छेद**- महादेवी वर्मा की सेविका के रूप में।

4. भक्तिन पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। लड़कियों को खोटा सिक्का या पराया धन माना जाता है। भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी। सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़के पैदा किए थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पडता था। भक्तिन और उसकी बेटियों को रूखा-सूखा मोटा अनाज खाने को मिलता था जबकि उसकी जिठानियाँ और उनके काले-कलूटे बेटे दूध-मलाई राब-चावल की दावत उड़ाते थे

5. भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायत के न्याय पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- भक्तिन की बेटी के सन्दर्भ में पंचायत द्वारा किया गया न्याय, तर्कहीन और अंधे कानून पर आधारित है। भक्तिन के जिठौत ने संपति के लालच में षडयंत्र कर भोली बच्ची को धोखे से जाल में फंसाया। पंचायत ने निर्दोष लड़की की कोई बात नहीं सुनी और

एक तरफ़ा फैसला देकर उसका विवाह जबरदस्ती जिठौत के निकम्मे तीतरबाज साले से कर दिया। पंचायत के अंधे कानून से दुष्टों को लाभ हुआ और निर्दोष को दंड मिला।

6. भक्तिन की पाक-कला के बारे में टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- भक्तिन को ठेठ देहाती, सादा भोजन पसंद था। रसोई में वह पाक छूत को बहुत महत्व देती थी। सुबह-सवेरे नहा-धोकर चौके की सफाई करके वह द्वार पर कोयले की मोटी रेखा खींच देती थी। किसी को रसोईघर में प्रवेश करने नहीं देती थी। उसे अपने बनाए भोजन पर बड़ा अभिमान था। वह अपने बनाए भोजन का तिरस्कार नहीं सह सकती थी।

7. सिद्ध कीजिए कि भक्तिन तर्क-वितर्क करने में माहिर थी।

उत्तर- भक्तिन तर्कपटु थी। केश मुँडाने से मना किए जाने पर वह शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध'। घर में इधर-उधर रखे गए पैसों को वह चुपचाप उठा कर छुपा लेती है, टोके जानेपर वह वह इसे चोरी नही मानती बल्कि वह इसे अपने घर में पड़े पैसों को सँभालकर रखना कहती है। पढाई-लिखाई से बचने के लिए भी वह अचूक तर्क देती है कि अगर मैं भी पढ़ने लगूँ तो घर का काम कौन देखेगा?

8. भक्तिन का दुर्भाग्य भी कम हठी नही था , लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर- भक्तिन का दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता था

1- बचपन में ही माँ की मृत्यु।

2- विमाता की उपेक्षा।

3- भक्तिन (लक्ष्मी) का बालविवाह।

4- पिता का निधन।

5- तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों के द्वारा भक्तिन की उपेक्षा।

6- पति की असमय मृत्यु।

7- दामाद का निधन और पंचायत के द्वारा निकम्मे तीतरबाज युवक से भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह।

8- लगान न चुका पाने पर जमींदार के द्वारा भक्तिन का अपमान।

9. भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन पर कैसे प्रभावित किया ?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर

महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी। भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

10. भक्तिन के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा की सेविका भक्तिन के व्यक्तित्व की विशेषताएं निम्नांकित हैं-

- समर्पित सेविका
- स्वामिमानी
- तर्कशीला
- परिश्रमी
- संघर्षशील

11. भक्तिन के दुर्गुणों का उल्लेख करें।

उत्तर- गुणों के साथ-साथ भक्तिन के व्यक्तित्व में अनेक दुर्गुण भी निहित है-

1. वह घर में इधर-उधर पड़े रुपये-पैसे को भंडार घर की मटकी में छुपा देती है और अपने इस कार्य को चोरी नहीं मानती।

2. महादेवी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन बात को इधर-उधर करके बताने को झूठ नही मानती। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए वह तर्क-वितर्क भी करती है।

3. वह दूसरों को अपनी इच्छानुसार बदल दना चाहती है पर स्वयं बिलकुल नही बदलती।

12. निम्नांकित भाषा-प्रयोगों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- • पहली कन्या के दो और संस्करण कर डाले- भक्तिन ने अपनी पहली कन्या के बाद उसके जैसी दो और कन्याएँ पैदा कर दी अर्थात भक्तिन के एक के बाद एक तीन बेटियाँ पैदा हो गयीं।

• खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी- आज भी अशिक्षित ग्रामीण समाज में बेटियों को खोटा सिक्का कहा जाता है। भक्तिन ने एक के बाद एक तीन बेटियाँ पैदा कर दी इसलिए उसे खोटे सिक्के को ढालने वाली मशीन कहा गया।

13. भक्तिन पाठ में लेखिका ने समाज की किन समस्याओं का उल्लेख किया है ?

उत्तर- भक्तिन पाठ के माध्यम से लेखिका ने भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओों का उल्लेख किया है

1. लड़के-लड़कियों में किया जाने वाला भेदभाव
2. विधवाओं की समस्या
3. न्याय के नाम पर पंचायतों के द्वारा स्त्रियों के आनवाधिकार को कुचलना

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर

परिवार और परिस्थितियों के कारण स्वभाव में जो विषमताएँ उत्पन्न हो गई हैं, उनके भीतर से एक स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है, इसी से उसके संपर्क में आनेवाले व्यक्ति उसमें जीवन की सहज मार्मिकता ही पाते हैं। छात्रावास की बालिकाओं में से कोई अपनी चाय बनवाने के लिए देहली पर बैठी रहती हैं, कोई बाहर खड़ी मेरे लिए नाश्ते को चखकर उसके स्वाद की विवेचना करती रहती है। मेरे बाहर निकलते ही सब चिड़ियों के समान उड़ जाती हैं और भीतर आते ही यथास्थान विराजमान हो जाती है। इन्हें आने में रूकावट न हो, संभवतः इसी से भक्तिन अपना दोनों जून का भोजन सवेरे ही बनाकर ऊपर के आले में रख देती है और खाते समय चौके का एक कोना धोकर पाक छूत के सनातन नियम से समझौता कर लेती है।

मेरे परिचितों और साहित्यिक बंधुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है, पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है। इस संबंध में भक्तिन की सहज बुद्धि विस्मित कर देने वाली है।

(क) भक्तिन का स्वभाव परिवार में रहकर कैसा हो गया है ?

उत्तर- विषम परिस्थिति जन्य उसके उग्र, हठी और दुराग्रही स्वभाव के बावजूद भक्तिन के भीतर स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है। उसके संपर्क में आने वाले व्यक्ति उसमें जीवन की सहज मार्मिकता ही पाते हैं।

(ख) भक्तिन के पास छात्रावास की छात्राएँ क्यों आती हैं ?

उत्तर- भक्तिन के पास कोई छात्रा अपनी चाय बनवाने आती है और देहली पर बैठी रहती है, कोई महादेवी जी के लिए बने नाश्ते को चखकर उसके स्वाद की विवेचना करती रहती है। महादेवी को देखते ही सब छात्राएँ भाग जाती हैं, उनके जाते ही फिर वापस आ जातीं हैं भक्तिन का सहज-स्नेह पाकर चिड़ियों की तरह चहचहाने लगती हैं।

(ग) छात्राओं के आने में रुकावट न डालने के लिए भक्तिन ने क्या उपाय क्रिया ?

उत्तर- छात्राओं के आने में रुकावट न डालने के लिए भक्तिन ने अपने पाक-छूत के नियम से समझौता कर लिया। भक्तिन अपना दोनों वक्त का खाना बनाकर सुबह ही आले में रख देती और खाते समय चौके का एक कोना धोकर वहाँ बैठकर खा लिया करती थी ताकि छात्राएँ बिना रोक-टोक के उसके पास आ सकें।

(घ) साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड है ?

उत्तर- भक्तिन महादेवी के साहित्यिक मित्र के प्रति सद्भाव रखती थी जिसके प्रति महादेवी स्वयं सद्भाव रखती थी। वह सभी से परिचित है, पर उनके प्रति सम्मान की मात्रा महादेवी जी के सम्मान की मात्रा पर निर्भर करती है। वह एक अद्भुत ढंग से जान लेती थी कि कौन कितना सम्मान करता है। उसी अनुपात में उसका प्राप्य उसे देती थी।